41

"उसकी इच्छा के अनुसार"

(8:29, 30)

रोमियों 8:28 में परमेश्वर की इच्छा की बात ने फुर्ती से पौलुस को आयत 29 और 30 में प्रभु की इच्छा की संक्षिप्त रूपरेखा देने को विवश किया:

> क्योंकि जिन्हें उसने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि उन और अगली आयतों में:

> ... [पौलुस का] आत्मा से निर्देशित बड़ा मन कालांतर के अनादिकाल से आने वाले अनादिकाल आस्था ईश्वरीय पूर्व ज्ञान से ईश्वरीय प्रेम तथा पहले से ठहराए जाने से ईश्वरीय प्रेम तक जिससे कोई बात हमें अलग नहीं कर सकेगी, परमेश्वर की पूरी योजना और उद्देश्य को समेट लेता है।[1]

चुनौतीपूर्ण आयतें

रोमियों 8:29, 30 का अध्ययन करने की तैयारी करते हुए हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम "रोमियों की पुस्तक के सबसे कठिन वचनों में एक"[2] उन आयतों पर आ रहे हैं, जो अधिकतर धर्मशास्त्रीय बहस का केन्द्र रही हैं। मोसेस ई. लार्ड ने लिखा है, "नये नियम [रोमियों 8:28-30] में लिपटे संक्षिप्त भाग से शायद किसी और वचन से इतना विवाद उत्पन्न नहीं हुआ है।"[3]

लार्ड ने यह भी ध्यान दिलाया कि 29 और 30 आयतें "कैल्विनवादी का धर्मसार" बनाती हैं। उन लोगों के लिए जो जॉन कैलविन के मतों से परिचित नहीं हैं,[4] मैं हमारे वचन पाठ से कुछ बातों की समीक्षा करता हूं:

- परमेश्वर को पहले से पता था कि वह किन लोगों का उद्धार करेगा।
- इन लोगों के उद्धार के लिए उसने पहले से ठहरा दिया [ठान लिया था]-उनकी किसी खूबी के कारण नहीं, बल्कि अपनी सज़्प्रभु इच्छा दिखाने के रूप में।
- उद्धार के लिए पहले से ठहराए लोगों को उसने सीधे, अर्थात पवित्र आत्मा के कार्य को भेजकर उन्हें बुलाया। उनमें जान डाल दी (उन्हें आत्मिक तौर पर जीवित कर दिया) और उनमें विश्वास उत्पन्न किया।

- उन्हें उसने बचा लिया (धर्मी ठहराया)।
- ज़्योंकि इन्होंने उद्धार पाने के लिए कुछ किया नहीं था, इसलिए वे खोने के लिए कुछ नहीं कर सकते। इस कारण बिना किसी कारण परमेश्वर एक दिन उन्हें महिमा देगा (स्वर्ग में)।

यदि आप इस धर्मशिक्षा की रोमियों 8:28, 29 से तुलना करें तो आप देख सकते हैं कि कैलविन की शिक्षा मानने वालों में ये आयतें ज़्यों प्रसिद्ध हैं। इसके साथ ही यदि आप सावधानीपूर्वक तुलना करते हैं तो आपको दो सच्चाइयां पता चलेंगी। पहली, ये आयतें संक्षिप्त रूप में वैसे नहीं पढ़ी जाती जैसे कैलविनवादियों को पढ़ना अच्छा लगता है। दूसरा उन्होंने इस वचन में अपनी अधिकतर धर्मशिक्षा *जोड़ ली* है।

विलियम बार्कले की टिप्पणी विचारयोग्य है: "यह वह वचन है जिसका बड़ी गज़्भीरता से दुरुपयोग हुआ है। यदि हमें इस को समझना है तो हमें इस मूल तथ्य को समझना आवश्यक है कि पौलुस का अभिप्राय इसे कभी धर्मशिक्षा या दर्शन शास्त्र की [गज़्भीर] अभिव्यज़्ति बनाना नहीं था।"[5] रोमियों 8: 29, 30 में पौलुस मसीही लोगों को यह आश्वस्त करना जारी रख रहा था कि परमेश्वर सब बातों को मिलाकर भलाई करवाता है (आयत 28)। उस आश्वासन को इस प्रकार व्यज़्त किया जा सकता है:

- परमेश्वर की एक योजना है।
- संसार में चाहे कितनी भी अव्यवस्था लगे, वह योजना आज भी कार्यकारी है। यह बदल नहीं सकती और न बदली जाएगी। इसे कार्यान्वित *किया* जाएगा यानी यह पूरी की जाएगी।
- इस कारण यदि पौलुस के पाठक उस योजना से लाभ उठाते हैं, तो वे विजयी *होंगे* (देखें आयत 37)।

यही आश्वासन आरज़्भिक मसीही लोगों को चाहिए था। यही आश्वासन हमें चाहिए।

शांति देने वाला वचन (8:29, 30)

तौ भी अभी भी हमें रोमियों 8:29, 30 में पौलुस की शज़्दावली को समझने में कठिनाई आती है। उसने अपने आपको इस तरह ज़्यों दर्शाया? वचन पाठ की हमारी समीक्षा को तीन भागों में बांटा जाएगा: परमेश्वर ने कालांतर में ज़्या किया, वह वर्तमान में ज़्या कर रहा है और भविष्य में ज़्या करेगा।

कालांतर में

हमारा वचनपाठ पहले उस पर ज़ोर देता है, जो परमेश्वर ने बहुत-बहुत पहले किया था। आयत 29 का आरज़्भ "जिन्हें उस [परमेश्वर] ने पहिले से जान लिया है" बोलने के साथ (आयत 29क) होता है। "पहले से जान लिया" "जानना" के लिए सबसे प्रचलित यूनानी शज़्द *ginosko* से लिया गया है, जिसके पहले *pro* ["पूर्व"] लगाया गया।

परमेश्वर का पूर्वज्ञान हमारे विश्वास के अथाह भेदों में से एक है। हम में से कइयों को यह समझना कठिन लगता है कि परमेश्वर पहले से कैसे जान सकता है कि कोई व्यक्ति उस व्यक्ति की स्वतन्त्र इच्छा का उल्लंघन करके उसे जाने बिना कैसे जान सकता है कि कोई किसी काम को करेगा। हम चकित होते हैं, ''यदि परमेश्वर को मालूम था कि ऐसा होगा, तो क्या उस व्यक्ति की वास्तव में कोई पसन्द है?'' हर बार की तरह पौलुस ने इससे जो हमारे मनों के लिए दो विपरीत अवधारणाएं हैं, मिलाने का कोई प्रयास नहीं किया।

स्पष्टतया पौलुस पहले मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा, चुनने के उसके अधिकार को मानता है। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने अपने पाठकों को विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो इस बात का संकेत है कि वे इसे करना चुन सकते थे या इसे करने से इनकार कर सकते थे (स्वतन्त्र इच्छा का अभ्यास)। पूरे पत्र में, उसने संकेत दिया (जैसा बाद में उसने तीमुथियुस को लिखा) कि परमेश्वर ''यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें'' (1 तीमुथियुस 2:4; प्रेरितों 10:34, 35; 2 पतरस 3:9ख)। रोमियों 8:29 में उसने कहा कि किसी अर्थ में परमेश्वर को पहले से मालूम था कि किसे बुलाया जाएगा, धर्मी ठहराया जाएगा और महिमा दी जाएगी। पौलुस के लिए इतना जानना काफ़ी था कि परमेश्वर के पूर्व ज्ञान ने मनुष्यजाति की स्वतन्त्र इच्छा में हस्तक्षेप नहीं किया और न मानवीय ज़िम्मेदारी को नकारा।

परन्तु हम में से अधिकतर लोग इन दोनों बाइबल की सच्चाइयों को मिलाने की कोशिश करने की आवश्यकता महसूस करते हैं। एक सम्भावना यह है कि परमेश्वर ने विशेष लोगों के उद्धार पाने को पहले से नहीं देखा, बल्कि एक तरह के व्यक्ति को देखा। अन्य शब्दों में उसने पहले से उद्धार पाए हुए समूह और खोए हुए समूह को देखा और हर व्यक्ति स्वयं निर्णय लेता है कि वह उद्धार पाए हुओं के समूह में होगा या खोए हुओं के।

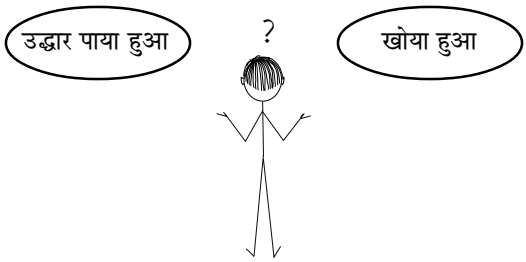

जिमी ऐलन ने इस स्थिति को इस प्रकार संक्षिप्त किया है: परमेश्वर ''ने पहले से नहीं ठहराया कि उसके बच्चे आज्ञाकारी होंगे, बल्कि यह ठहराया कि आज्ञाकारी लोग उसके बच्चे होंगे।''[6]

इस ढंग को आमतौर पर आयत 30 में ''बुलाया'' से जोड़ा जाता है: ''फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी'' (आयत 30क)। ''बुलाया'' *kaleo* (''बुलाना'') का कृदंत रूप है। पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को बताया कि उन्हें ''एक देह में बुलाया'' गया था (कुलुस्सियों 3:15)। ''एक देह'' कलीसिया ही है (कुलुस्सियों 1:18)। ''कलीसिया'' (चर्च) का अनुवाद *kaleo* (''बुलाना'') के साथ उपसर्ग *ek* (''बाहर'') के रूप को मिलाने वाले शब्द *ekklesia* से किया गया है। *Ekklesia* उन लोगों को कहा गया है, जिन्हें आत्मिक अन्धकार में से परमेश्वर की

ज्योति में बुलाया गया (देखें 1 पतरस 2:9)। इफिसुस के कलीसिया के नाम लिखते हुए पौलुस ने स्पष्ट किया कि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग थी (देखें इफिसियों 3:10, 11, 21)। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर ने पहले से देखा कि उद्धार पाए हुओं अर्थात "बुलाए हुए लोगों" की एक देह होगी जिसे "कलीसिया" कहा जाएगा। फिर यह प्रत्येक विश्वासी पर है कि प्रभु की कलीसिया का सदस्य बने या न।

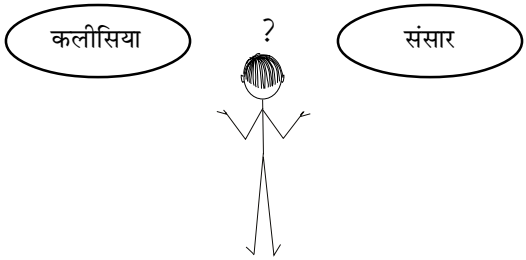

एक अतिरिज़्त विचार इस तथ्य पर आधारित है कि "जानना" (*ginosko*) "आम तौर पर 'जानने वाले' व्यज़्ति और जानी जाने वाली वस्तु के बीच *सज़्बन्ध* का संकेत देता है।"[7] AB में रोमियों 8:29 के वाज़्यांश "जिन्हें वह [परमेश्वर] पहले से जानता [जिनसे वह पहले से परिचित था, उनसे पहले प्रेम करता था]" वाज़्यांश से यह संकेत मिलता है। यह सुझाव दिया गया है कि "पहले से जानना" शज़्द में ज़ोर अधिक इस बात पर नहीं है कि परमेश्वर पहले से *किसे* जानता था, जितना इस पर कि परमेश्वर ने *ज़्या* करने की योजना बनाई यानी परमेश्वर की योजना का आरज़्भ अपनी सृष्टि के साथ व्यज़्तिगत सज़्बन्ध बनाने का निर्णय लेकर हुआ।

मैं बाइबल शिक्षकों को केवल रूपरेखा में दिए गए ढंग की सिफ़ारिश करता हूं। यह वचन पाठ की मांग पूरी करता है अर्थात यह बाइबल की किसी और जगह पाई जाने वाली शिक्षा से मेल खाती है और अधिकतर छात्र इसे समझ सकते हैं। इसके साथ ही शिक्षक के "यदि परमेश्वर को पहले से मालूम होता कि कौन *लोग* सुसमाचार को ग्रहण करेंगे और कौन इसे ठुकराएंगे?" का प्रश्न समझने में कठिनाई का महत्व हो सकता है। यदि हम परमेश्वर के सर्वज्ञान (यह तथ्य कि वह सब कुछ जानता है) में विश्वास रखते हैं, तो हमें इस सज़्भावना को समझना पड़ेगा कि यदि उसने इसे जानना चाहा तो वह इसे जान पाया (प्रेरितों 18:10) पर विचार करें।

कुछ लोगों को परेशान करने वाला प्रश्न यह है कि उसे सज़्बन्धित लोगों की स्वतन्त्र इच्छा में हस्तक्षेप किए बिना ऐसी बातें कैसे पता चलीं। परमेश्वर के पूर्वज्ञान की बहुत सी बातों की मुझे समझ नहीं है, परन्तु मैं इतना मानता हूं कि इस प्रश्न का उज़र हां है। पहले एक पाठ में मैंने सुझाव दिया था कि सज़्बन्धित व्यज़्ति की स्वतन्त्र इच्छा में हस्तक्षेप किए बिना किसी घटना के घटने *के बाद* हम उसे जान सकते हैं। ठीक वैसे ही परमेश्वर व्यज़्ति की पसन्द की अपनी स्वतन्त्रता से अलग किए बिना किसी घटना के घटने से *पहले* परिचित हो सकता है।

जॉन बैंटले ने मुझे एक उदाहरण दिया।[8] उसने अपनी पड़ोती के साथ बच्चों की एक वीडियो फिल्म देखने की बात की। उसने कहा कि उस छोटी लड़की ने वह फिल्म इतनी बार देखी कि उसे वह फिल्म ज़ुबानी याद है। वह किसी पात्र के कुछ कहने से पहले ही बोल देती कि

वह ज़्या बोलेगा और पड़दादा को पता चल जाता कि आगे ज़्या होने वाला है। जेज़्स ने कहा, "मेरी पड़पोती के केवल इतना जानने से कि आगे ज़्या होने वाला है, उसे आगे की बात के लिए ज़िज़्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।" फिर मुस्कुराते हुए उसने कहा, "जहां तक परमेश्वर की बात है, उसने वीडियो पहले ही देख लिया है।"

ज़्या आप किसी ऐसे व्यज़्ति को जानते हैं, जिसकी कोई पसंदीदा कहानी है? जब वह अपनी कहानी (सौवीं बार) बताना आरज़्भ करता है तो आपको पहले से पता होगा कि वह आगे ज़्या कहने वाला है, परन्तु इससे आप उसके कहानी बताने के ज़िज़्मेदार नहीं हो जाते। इसका अर्थ केवल यह है कि आपने वह कहानी पहले ज़रूर सुनी हुई है। बेशक जितनी भी तुलनाएं की जाएं, काफ़ी नहीं है, परन्तु कम से कम वे इस बात को समझाती हैं कि जो कुछ होता है, उसके लिए ज़िज़्मेदार हुए बिना होने वाली बात पहले से जानना कैसे सज़्भव है।

मैं दोहराता हूं: परमेश्वर के पूर्वज्ञान के बारे में बहुत कुछ है, जो मुझे और आपको कभी समझ नहीं आएगा। परन्तु हम उसके पूर्वज्ञान की कुछ रोमांचकारी सच्चाइयों को समझ सकते हैं। मनुष्यजाति की सृष्टि करने से बहुत पहले परमेश्वर ने भविष्य में झांक लिया था। उसने स्पष्ट तौर पर मनुष्य के पाप में गिरने को देख लिया था और मनुष्यजाति के छुटकारे के लिए योजना बनाई थी। इस योजना के केन्द्र में मसीह का क्रूस पर दिया जाना और महिमा पाना तथा कलीसिया की स्थापना थी (देखें प्रेरितों 2:23; इफिसियों 3:10, 11, 21)। आइए इसे और व्यज़्तिगत ढंग से देखते हैं: परमेश्वर ने *हमें* और *हमारी* आत्मिक आवश्यकताओं को देखा और *हमारे* लिए प्रबन्ध किया। हम सबको प्रभु के पूर्वज्ञान के लिए उसका धन्यवाद करना चाहिए!

वचन में आगे बढ़ते हुए हम पूछ सकते हैं, "अपने पूर्वज्ञान के बारे में परमेश्वर का ज़्या लक्ष्य [अग्रिम में उसकी योजना] था?" पौलुस ने कहा कि "जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है, उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप [*eikon*] में हों" (रोमियों 8:29क, ख)। "पहले से ठहराया" का अनुवाद *proorizo* (*pro* ["पूर्व, पहले से"] के साथ *horizo* ["एक सीमा ठहराना, तय करना"]) से किया गया है।[9] इसका अर्थ "पहले से तय करना" है। "स्वरूप में हो" का अनुवाद *summorphos* (*sun* ["के साथ"] और *morphe* [रूप]) से किया गया है। इस शज़्द का इस्तेमाल किसी दूसरे की तरह "रूप" होने के लिए किया जाता है। रोमियों 8:29 को अपने मन में रेखांकित कर लें। युगों से परमेश्वर की इच्छा यीशु जैसे लोगों का समूह बनाना है।

मनुष्यजाति को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था (देखें उत्पज़ि 1:26); परन्तु पाप के कारण यह टूटी हुई आकृति, बिगड़ी हुई शज़्ल बन गई। फिर संसार में यीशु आया। यीशु "दृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप" (कुलुस्सियों 1:15; देखें 2 कुरिन्थियों 4:4), "उसके तत्व की छाप" था (इब्रानियों 1:3)। अब हर व्यज़्ति को यीशु जैसा बनने की चुनौती दी जाती थी (देखें फिलिप्पियों 2:5; 1 परतस 2:21; इफिसियों 1:4)। फिलिप्स के अनुवाद में "परमेश्वर ने ... चुना कि वे उसके पुत्र के परिवार जैसे लगें।" यह प्रक्रिया इस जीवन में आरज़्भ होती है और मसीह के वापस आने पर पूरी होती है। पौलुस ने लिखा कि "हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं" (2 कुरिन्थियों 3:18)। यूहन्ना ने यह विचार जोड़ा कि "जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, ज़्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे, जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3:2)।

हमारा वचन पाठ आगे कहता है कि "ताकि वह [यीशु] बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे"[10]

(आयत 29ग)। ''पहिलौठा'' का अनुवाद *prototokos* (*protos* [''पहला''] के साथ *tikto* [''जन्म देना'']) से लिया गया है। बाइबल के समयों में पहिलौठे पुत्र को पसंदीदा स्थिति मिलती थी।[11] ''पहलौठा'' शज़्द का अर्थ न केवल ग्रंथ में पहला बल्कि प्राथमिकता में भी पहला था। इस कारण NIrV में ''मसीह पहला और कई भाइयों में सबसे सज़्माननीय होगा'' है।

अपनी सनातन योजना में परमेश्वर ने यीशु को एक बड़े आत्मिक परिवार के आगे भेजे जाने वाले के रूप में पहले से ठहराया। उस घराने (कलीसिया; 1 तीमुथियुस 3:15) में, परमेश्वर हमारा पिता, यीशु हमारा ''बड़ा भाई'' है और हम आपस में भाई और बहने हैं। यह अहसास कितना अद्‌भुत है कि मसीह हमें ''भाई'' कहने से ''नहीं लजाता'' (इब्रानियों 2:11)।

वर्तमान में

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से भी बहुत पहले यह योजना बनाई और यह इच्छा की थी। उसने इस योजना को कैसे कार्यान्वित किया और वह वर्तमान में ज़्या कर रहा है? पौलुस ने कहा, ''सो जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी'' (रोमियों 9:30क)। कहीं और पौलुस ने कहा कि हमें ''अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है'' (1 कुरिन्थियों 1:9)। हमने पहले ''बुलाया'' शज़्द पर चर्चा की थी, परन्तु कुछ अतिरिज़्त टिप्पणियों पर बात करनी सही रहेगी।

परमेश्वर द्वारा सब को बुलाने (निमन्त्रण देने) का कोई अर्थ है। यीशु ने कहा, ''*हे सब* परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुज़्हें विश्राम दूंगा'' (मज़ी 11:28)। 2 थिस्सलुनीकियों 2:14 में पौलुस ने कहा कि परमेश्वर हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाता है और सुसमाचार सब के लिए है (मरकुस 16:15)। अफ़सोस की बात है कि सुसमाचार को सुनने वाला व्यज़्ति इसकी बुलाहट का उज़र नहीं देता (देखें रोमियों 10:16, 17)। इस कारण इस बात का अर्थ है जिसमें ''बुलाए गए'' वाज़्यांश *केवल* उनके लिए हैं, जिन्होंने आज्ञाकारी विश्वास से परमेश्वर की बुलाहट को हां कहा है (देखें रोमियों 1:6; 1 कुरिन्थियों 1:24; यहूदा 1; प्रकाशितवाज़्य 17:14)।

आज परमेश्वर सुसमाचार के द्वारा लोगों को बुला रहा है, परन्तु वह और ज़्या कर रहा है? हम पढ़ते हैं, ''... जिन्हें बुलाया [जिन्होंने विश्वास की बात मानी], उन्हें धर्मी भी ठहराया है'' (आयत 30ख)। हमारे अध्ययन में अब तक, ''धर्मी ठहराया'' शज़्द प्रसिद्ध हो जाना चाहिए। पौलुस ने पापियों को धर्मी ठहराने के लिए परमेश्वर का आधार बनाने के लिए रोमियों का अपना लगभग आधा पत्र लगा दिया। ''धर्मी ठहराया'' शज़्द पढ़ते हुए अपने मन में अब तक धर्मी ठहराए जाने के बारे में सीखी अद्‌भुत सच्चाइयों पर विचार करें। क्रूस के कारण, परमेश्वर हम में से उन लोगों को, जिन्होंने विश्वास किया ऐसे गिनता है *जैसे* हम धर्मी हों!

भविष्य में

आयत 29 में पौलुस ने एक ईश्वरीय गतिविधि की अर्थात पांच कड़ियों वाली ज़ंजीर का बयान करना आरज़्भ किया। हमने पहली चार कड़ियों अर्थात पहले से जानना, पहले से ठहराना, बुलाना और धर्मी ठहराना देख लिए हैं। अब हम उस ज़ंजीर की अन्तिम कड़ी के लिए तैयार हैं:

"और जिन्हें धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी है" (आयत 30ग)।

"धर्मी ठहराया" भूतकाल में (यूनानी में कृदंत काल) है, इसलिए इसे उस महिमा के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो तेजस्वी पिता की संतान के रूप में वर्तमान में हमें मिली है (2 कुरिन्थियों 3:18; 1 पतरस 1:8)। परन्तु संदर्भ यह संकेत देता है कि उसके मन में मसीह के वापस आने के समय "हम पर प्रकट होने वाली महिमा" थी (रोमियों 8:18; देखें आयतें 17, 21)। प्रेरित ने कुलुस्से के लोगों को लिखा, "जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रकट किए जाओगे" (कुलुस्सियों 3:4; देखें 1 पतरस 1:7)। यदि पौलुस के मन में वह बात थी, जो भविष्य में होने वाली थी, तो उसने भूतकाल का इस्तेमाल ज़्यों किया? शायद वह उसका इस्तेमाल कर रहा था जिसे हम "भविष्यसूचक भूत" कहते हैं "जिसके द्वारा भविष्यवाणी की गई किसी घटना को ऐसे चिह्नित किया जाता है, जैसे यह पहले ही हो चुकी हो।"[12]

ज़्या पौलुस यह कह रहा था कि धर्मी ठहराया जाने वाला हर व्यज़्ति अनन्तकाल के लिए भी महिमा पाएगा, यानी इनमें से किसी के खोने की कोई सज़्भावना नहीं है? नहीं पौलुस बात पर ज़ोर दे रहा था कि परमेश्वर के पास एक योजना, एक सनातन डिज़ाइन है और इसे कार्यान्वित *किया* जाएगा। लोगों के रूप में हम इस योजना को मान सकते और इसका भाग हो सकते हैं या नहीं।

- हम परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार कर सकते हैं या इसे नकार सकते हैं।
- हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जा सकते हैं, या हम बिना छुड़ाए रह सकते हैं।
- धर्मी ठहराए जाने पर, हम आत्मा के साथ चल सकते हैं और एक दिन महिमा पाएंगे या शरीर के साथ चलकर खो सकते हैं (देखें रोमियों 8:13)।

व्यज़्तियों के रूप में आप और मैं परमेश्वर की योजना के रूप में डालें या नहीं इससे इसका पूरा होना नहीं टलेगा। उसका उद्देश्य किसी व्यज़्ति के निर्णय पर निर्भर नहीं है। उसकी योजना कार्यान्वित *होगी*। यह तब भी कार्यान्वित होगी यदि केवल कुछ लोग उसकी बुलाहट को मानते हैं, और तब भी यदि बहुत से लोग उसकी मानते हैं। परमेश्वर की योजना पज़्की और सुनिश्चित है। अव्यवस्था और गड़बड़ भरे संसार में, इससे बड़ी तसल्ली मिलती है। पूरा जीवन परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के विजयी समापन की ओर जा रहा है।

सारांश

जैसा कि इस प्रस्तुति के आरज़्भिक भाग में कहा गया था, रोमियों 8:29, 30 विवाद से भरा वचन है। परन्तु जैसे डग्लस जे. मू ने कहा है:

> हमें पौलुस की मुज़्य बात अर्थात विश्वासियों को यह आश्वासन देने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर के पास एक योजना है जिसे वह बता रहा है, जो हमें भावी महिमा उपलज़्ध कराती है। वह हमें वचन में से धर्मशास्त्रीय प्रश्नों के साथ नहीं बल्कि आश्वासन की एक नई भावना के साथ बाहर आने की इच्छा करता है: परमेश्वर जिसने

हम में भलाई का काम आरम्भ किया, वास्तव में इसे मसीह यीशु के दिन में पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)।[13]

परमेश्वर की योजना पूरी होगी। प्रश्न यह है कि आप उस योजना का लाभ लेना चाहते हैं या नहीं। यदि आप ने अभी तक इसका लाभ नहीं लिया है, तो मेरा आपसे आग्रह है कि आज ही अपने आपको प्रभु के आगे सौंप दें (याकूब 4:7क; मरकुस 16:16; प्रकाशितवाक्य 2:10) जिससे आप भी इस आश्वासन को पा सकें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट

यदि आपको उदाहरण चाहिए कि परमेश्वर अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को कैसे पूरा करता है तो आप यिर्मयाह 29:10-14 का इस्तेमाल कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलीनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 246. [2]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 82. [3]मोसेज ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लैक्ज़िंगटन, कैंटिकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गास्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 279. [4]फ्रांसीसी धर्मशास्त्री जॉन कैलविन (1509-1564) प्रोटेस्टेंट सुधार में एक मुख्य व्यक्ति था। उसके लेख सुधार को आकार देने के लिए बड़ा प्रभाव डालते थे। [5]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 114. [6]एलन, 82. [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्प्लीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 346. [8]जेम्स बेनटले, बाइबल ब्लास, 5 दिसंबर 2003 के बाद टिप्पणी करता है। [9]वाइन, 165. [10]"भाई" शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में किया जाता है और इसका अर्थ मसीह में भाइयों और बहनों दोनों के लिए है।

[11]उदाहरण के लिए, उसे विरासत का दोहरा भाग मिलता था (देखें व्यवस्थाविवरण 21:17)। [12]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 168. [13]डगलस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 271.